International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

1947 के विभाजन का हरियाणा के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव : एक ऐतिहासिक अध्ययन

हेमंत वर्मा
इतिहास विभाग, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * हेमंत वर्मा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21441331

Abstract

सन् 1947 का भारत-विभाजन भारतीय इतिहास की ऐसी घटना है जिसने केवल दो स्वतंत्र राष्ट्रों के निर्माण का मार्ग ही प्रशस्त नहीं किया, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इस घटना के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर जनसंख्या का स्थानांतरण हुआ, जिसके साथ सामाजिक अस्थिरता, आर्थिक संकट और सांस्कृतिक परिवर्तन भी जुड़े रहे। वर्तमान हरियाणा उस समय अविभाजित पंजाब का हिस्सा था और विभाजन से प्रभावित प्रमुख क्षेत्रों में सम्मिलित था। विभाजन के बाद हरियाणा में केवल जनसंख्या का स्वरूप ही नहीं बदला, बल्कि भूमि स्वामित्व, उत्पादन प्रणाली, स्थानीय बाजारों और सामुदायिक संबंधों में भी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिले। अनेक स्थानों पर परित्यक्त संपत्तियों का पुनर्वितरण हुआ, नई व्यापारिक इकाइयाँ स्थापित हुईं और कृषि क्षेत्र में ऐसे परिवर्तन प्रारम्भ हुए जिन्होंने आगे चलकर राज्य के आर्थिक विकास को गति प्रदान की। दूसरी ओर स्थानीय समाज और विस्थापित समुदायों के बीच समायोजन की प्रक्रिया ने सामाजिक पुनर्गठन का नया अध्याय भी लिखा।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विभाजन के पश्चात हरियाणा में हुए सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए सरकारी अभिलेख, जनगणना प्रतिवेदन, जिला गजेटियर, पुनर्वास विभाग के दस्तावेज तथा संबंधित ऐतिहासिक साहित्य का उपयोग किया जाएगा। यह शोध इस तथ्य को समझने का प्रयास करता है कि विभाजन को केवल विस्थापन और त्रासदी के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है; इसके परिणामस्वरूप हरियाणा में सामाजिक पुनर्गठन, आर्थिक पुनर्निर्माण और क्षेत्रीय विकास की नई प्रक्रियाएँ भी विकसित हुईं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 11-06-2026
- **Accepted:** 17-07-2026
- **Published:** 19-07-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 328-334
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

वर्मा हे. 1947 के विभाजन का हरियाणा के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव : एक ऐतिहासिक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):328-334.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: भारत-विभाजन, हरियाणा, शरणार्थी, पुनर्वास, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, कृषि, नगरीकरण, भूमि पुनर्वितरण, ऐतिहासिक अध्ययन

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारत की स्वतंत्रता का वर्ष 1947 जहाँ एक ओर राष्ट्रीय स्वाधीनता का प्रतीक था, वहीं दूसरी ओर विभाजन की पीड़ा भी उसी इतिहास का अभिन्न हिस्सा बन गई। राजनीतिक निर्णय के परिणामस्वरूप लाखों लोगों को अपने घर-परिवार, आजीविका और सामाजिक परिवेश को छोड़कर नए स्थानों पर बसना पड़ा। यह केवल सीमाओं का परिवर्तन नहीं था, बल्कि एक ऐसा सामाजिक परिवर्तन था जिसने उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों के जीवन को नई दिशा दी।

वर्तमान हरियाणा, जो उस समय संयुक्त पंजाब का भाग था, विभाजन से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित क्षेत्रों में सम्मिलित था। पश्चिमी पंजाब से बड़ी संख्या में आए विस्थापित परिवारों का पुनर्वास राज्य के विभिन्न जिलों में किया गया। इस प्रक्रिया ने कृषि भूमि के स्वामित्व, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, शहरी बाजारों, व्यापारिक गतिविधियों तथा सामाजिक संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए। कई स्थानों पर नए गाँव और बस्तियाँ विकसित हुईं, जबकि पुराने आर्थिक ढाँचे में भी उल्लेखनीय बदलाव आए।

विस्थापित परिवार अपने साथ केवल जीवन की कठिन स्मृतियाँ ही नहीं लाए, बल्कि कृषि का अनुभव, व्यापारिक कौशल, श्रमशीलता और नई आर्थिक सोच भी लेकर आए। इन विशेषताओं ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान की। साथ ही, स्थानीय समाज के सामने संसाधनों के पुनर्वितरण, सामाजिक समायोजन और प्रशासनिक चुनौतियों जैसी अनेक परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हुईं। इन दोनों पक्षों को साथ रखकर देखने पर स्पष्ट होता है कि विभाजन ने हरियाणा के विकास को अनेक स्तरों पर प्रभावित किया।

यद्यपि भारत-विभाजन पर पर्याप्त इतिहासलेखन उपलब्ध है, फिर भी हरियाणा के संदर्भ में सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। अधिकांश शोध पंजाब, दिल्ली अथवा राष्ट्रीय स्तर तक सीमित रहे हैं। इस कारण वर्तमान शोध हरियाणा को एक स्वतंत्र अध्ययन-इकाई मानते हुए विभाजन के दीर्घकालिक प्रभावों का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

2. विभाजन से पूर्व हरियाणा की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

1947 से पूर्व वर्तमान हरियाणा कोई पृथक प्रशासनिक इकाई नहीं था, बल्कि संयुक्त पंजाब प्रान्त का अभिन्न भाग था। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र उत्तर-पश्चिम भारत के उन इलाकों में सम्मिलित था जहाँ कृषि आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार थी। यद्यपि क्षेत्र के विभिन्न भागों की भौगोलिक परिस्थितियाँ एक-दूसरे से भिन्न थीं, फिर भी अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी और उनका जीवन कृषि तथा पशुपालन पर निर्भर था।

उस समय हरियाणा के गाँव केवल कृषि उत्पादन के केन्द्र नहीं थे, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का भी आधार थे। कृषि कार्य पारिवारिक श्रम पर आधारित था तथा अधिकांश किसानों के पास सीमित भूमि थी। गेहूँ, बाजरा, जौ, कपास, चना और गन्ना जैसी फसलें प्रमुख रूप से उगाई जाती थीं। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध थी, वहाँ उत्पादन अपेक्षाकृत अधिक था, जबकि शुष्क क्षेत्रों में वर्षा आधारित खेती प्रचलित थी।

सामाजिक दृष्टि से यह क्षेत्र विविध जातीय और धार्मिक समुदायों का साझा निवास था। हिन्दू, मुस्लिम और सिख समुदाय ग्रामीण तथा नगरीय दोनों क्षेत्रों में रहते थे। विभिन्न समुदायों के बीच आर्थिक लेन-देन, कृषि कार्यों में सहयोग तथा स्थानीय मेलों और बाज़ारों के माध्यम से नियमित संपर्क बना रहता था। यद्यपि सामाजिक जीवन पर जाति व्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था, फिर भी दैनिक जीवन में पारस्परिक निर्भरता का स्वरूप भी विद्यमान था।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के साथ-साथ छोटे नगर स्थानीय व्यापार के केन्द्र के रूप में विकसित हो रहे थे। अम्बाला, करनाल, रोहतक, हिसार तथा पानीपत जैसे नगर कृषि उत्पादों के विनिमय, अनाज व्यापार और हस्तशिल्प गतिविधियों के लिए जाने जाते थे। औद्योगिक विकास अभी प्रारम्भिक अवस्था में था, इसलिए अधिकांश आर्थिक गतिविधियाँ कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों तक सीमित थीं।

शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी आधारभूत सुविधाओं का विस्तार सीमित था। विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या कम थी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत निम्न था। इसके बावजूद सामाजिक संगठनों और स्थानीय संस्थाओं की भूमिका सामुदायिक जीवन को व्यवस्थित रखने में महत्वपूर्ण थी।

इन परिस्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि विभाजन से पूर्व वर्तमान हरियाणा की अर्थव्यवस्था कृषि-प्रधान, समाज ग्रामीण-आधारित तथा व्यापारिक गतिविधियाँ सीमित थीं। यही वह सामाजिक एवं आर्थिक संरचना थी, जिसे 1947 के बाद हुए व्यापक जनसंख्या-स्थानांतरण और पुनर्वास की प्रक्रिया ने गहराई से प्रभावित किया।

3. हरियाणा में शरणार्थियों का आगमन एवं पुनर्वास

भारत-विभाजन के तुरंत बाद पश्चिमी पंजाब, सिंध और उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत से लाखों हिन्दू एवं सिख परिवारों ने भारत की ओर पलायन किया। इन विस्थापित परिवारों के सामने सबसे बड़ी चुनौती सुरक्षित आश्रय, आजीविका और सामाजिक पुनर्स्थापना की थी। तत्कालीन संयुक्त पंजाब का पूर्वी भाग होने के कारण वर्तमान हरियाणा पुनर्वास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा।

शुरुआती महीनों में हजारों परिवार रेलगाड़ियों, बैलगाड़ियों और पैदल यात्रा करके हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचे। अनेक लोगों ने हिंसा, संपत्ति की हानि और पारिवारिक विछोह जैसी कठिन परिस्थितियों का सामना किया था। इसलिए पुनर्वास केवल प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी एक जटिल प्रक्रिया भी थी।

प्रारम्भिक चरण में सरकार ने अम्बाला, करनाल, पानीपत, रोहतक, हिसार और सिरसा सहित अनेक स्थानों पर अस्थायी राहत शिविर स्थापित किए। इन शिविरों में भोजन, चिकित्सा, अस्थायी आवास तथा आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था की गई। परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण अवश्य थीं, किन्तु प्रशासन ने सीमित संसाधनों में राहत कार्यों को व्यवस्थित करने का प्रयास किया।

जब तत्काल राहत की आवश्यकता कुछ हद तक कम हुई, तब पुनर्वास की स्थायी योजनाओं पर कार्य प्रारम्भ हुआ। पाकिस्तान चले गए मुस्लिम परिवारों द्वारा छोड़ी गई कृषि भूमि, मकानों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों का सर्वेक्षण कर उनका पुनर्वितरण किया गया। इस नीति के माध्यम से विस्थापित परिवारों को आजीविका का आधार उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। भूमि आवंटन की प्रक्रिया सभी स्थानों पर समान नहीं थी, फिर भी इसने बड़ी संख्या में परिवारों को आर्थिक रूप से पुनः स्थापित होने का अवसर प्रदान किया।

पुनर्वास के दौरान स्थानीय समाज की भूमिका भी उल्लेखनीय रही। अनेक स्थानों पर ग्रामीण समुदायों ने विस्थापित परिवारों को अस्थायी आवास, कृषि कार्य तथा सामाजिक सहयोग उपलब्ध कराया।

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रारम्भिक वर्षों में संसाधनों के बँटवारे और रोजगार के अवसरों को लेकर कुछ तनाव अवश्य दिखाई दिए, किन्तु समय के साथ सहयोग और पारस्परिक विश्वास का वातावरण विकसित होने लगा।

शरणार्थी समुदाय अपने साथ केवल श्रमशक्ति ही नहीं लाया था, बल्कि कृषि, व्यापार, हस्तशिल्प और लघु उद्योगों का व्यावहारिक अनुभव भी लेकर आया था। पश्चिमी पंजाब में विकसित कृषि पद्धतियों तथा व्यापारिक दृष्टिकोण का प्रभाव धीरे-धीरे हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देने लगा। अनेक परिवारों ने छोटे व्यापार, अनाज मंडियों, कपड़ा व्यवसाय, परिवहन तथा अन्य आर्थिक गतिविधियों की शुरुआत की, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई गति मिली।

पुनर्वास की प्रक्रिया का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। नए सामाजिक संबंध बने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़ा और अनेक क्षेत्रों में सामाजिक संरचना का स्वरूप बदलने लगा। स्थानीय समाज और विस्थापित समुदायों के बीच प्रारम्भिक दूरी धीरे-धीरे कम होती गई तथा साझा आर्थिक हितों और सामाजिक सहभागिता ने पारस्परिक विश्वास को मजबूत किया।

इस प्रकार हरियाणा में शरणार्थियों का पुनर्वास केवल विस्थापित लोगों को बसाने की प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं था, बल्कि यह सामाजिक पुनर्गठन और आर्थिक पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण चरण सिद्ध हुआ। आगे के वर्षों में इसी प्रक्रिया ने हरियाणा के कृषि विकास, व्यापारिक विस्तार और नगरीकरण की आधारभूमि तैयार की।

4. हरियाणा के सामाजिक जीवन पर विभाजन का प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सन् 1947 का भारत-विभाजन हरियाणा के सामाजिक इतिहास में एक निर्णायक मोड़ के रूप में देखा जा सकता है। यद्यपि उस समय वर्तमान हरियाणा एक पृथक राज्य नहीं था और संयुक्त पंजाब का हिस्सा था, फिर भी विभाजन के परिणामस्वरूप यहाँ जो परिवर्तन प्रारम्भ हुए, उन्होंने आगे चलकर इस क्षेत्र की सामाजिक संरचना को नए स्वरूप में ढालने का कार्य किया। जनसंख्या के व्यापक स्थानांतरण ने केवल लोगों के निवास स्थान नहीं बदले, बल्कि सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक परंपराओं, पारिवारिक जीवन और सामुदायिक संस्थाओं को भी प्रभावित किया। इसलिए हरियाणा के सामाजिक इतिहास का अध्ययन विभाजन के संदर्भ के बिना अधूरा माना जाएगा।

4.1 जनसंख्या संरचना में परिवर्तन

विभाजन का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव जनसंख्या की संरचना पर दिखाई देता है। पश्चिमी पंजाब से बड़ी संख्या में हिन्दू और सिख परिवार हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में आकर बसे, जबकि अनेक मुस्लिम परिवार पाकिस्तान चले गए। इस परिवर्तन ने अनेक गाँवों और नगरों की जनसंख्या संरचना को पूरी तरह बदल दिया।

अम्बाला, करनाल, पानीपत, रोहतक, हिसार, सिरसा और गुरुग्राम जैसे क्षेत्रों में शरणार्थियों की बड़ी आबादी बसाई गई। इससे धार्मिक और सामाजिक संतुलन में परिवर्तन आया। कई स्थानों पर खाली पड़े मकानों और कृषि भूमि का पुनः उपयोग हुआ, जबकि कुछ क्षेत्रों में नई बस्तियाँ विकसित की गईं। 1951 की जनगणना के आँकड़े भी यह संकेत देते हैं कि विभाजन के बाद जनसंख्या वितरण में उल्लेखनीय बदलाव आया, जिसका प्रभाव आगामी दशकों तक बना रहा।

हालाँकि प्रारम्भिक वर्षों में यह परिवर्तन अचानक और चुनौतीपूर्ण था, लेकिन धीरे-धीरे नई सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप समाज ने स्वयं को ढाल लिया। इस प्रकार जनसंख्या परिवर्तन केवल सांख्यिकीय घटना नहीं था, बल्कि सामाजिक पुनर्गठन की शुरुआत भी था।

4.2 सामाजिक पुनर्गठन और सामुदायिक समायोजन

विस्थापित परिवारों के आगमन के साथ हरियाणा में सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। नए समुदायों को केवल रहने का स्थान देना पर्याप्त नहीं था; उन्हें स्थानीय सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा बनाना भी आवश्यक था। यही कारण है कि पुनर्वास के साथ-साथ सामाजिक समायोजन भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया बन गया।

प्रारम्भिक चरण में भूमि, रोजगार और सीमित संसाधनों को लेकर कुछ स्थानों पर असंतोष की स्थिति बनी। स्थानीय लोगों को आशंका थी कि बढ़ती जनसंख्या से उपलब्ध संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव पड़ेगा। दूसरी ओर शरणार्थी परिवार अपने जीवन को पुनः व्यवस्थित करने के संघर्ष में लगे हुए थे। इन परिस्थितियों में प्रशासन, स्थानीय पंचायतों, धार्मिक संस्थाओं और सामाजिक संगठनों ने दोनों समुदायों के बीच संवाद और सहयोग की भावना विकसित करने का प्रयास किया।

समय बीतने के साथ आर्थिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी। कृषि कार्यों, व्यापारिक लेन-देन तथा स्थानीय संस्थाओं में संयुक्त भागीदारी के कारण दोनों समुदायों के बीच विश्वास स्थापित होने लगा। धीरे-धीरे सामाजिक दूरी कम हुई और सहयोग की भावना ने स्थायी रूप ग्रहण किया। यह प्रक्रिया हरियाणा के सामाजिक विकास की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक मानी जा सकती है।

4.3 पारिवारिक जीवन और सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन

विभाजन के दौरान असंख्य परिवार बिछड़ गए। अनेक लोगों ने अपने परिजन खो दिए, जबकि कई परिवारों को नए स्थान पर शून्य से जीवन आरम्भ करना पड़ा। ऐसी परिस्थितियों में परिवार केवल भावनात्मक सहारा नहीं रहा, बल्कि आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा का भी प्रमुख आधार बन गया।

हरियाणा में पुनर्वासित परिवारों ने सीमित संसाधनों के बावजूद संयुक्त परिवार व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास किया। सामूहिक श्रम, पारिवारिक सहयोग और पारस्परिक विश्वास ने पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को गति दी। परिवारों ने कृषि, व्यापार और छोटे व्यवसायों में एक-दूसरे का सहयोग किया, जिससे आर्थिक स्थिरता धीरे-धीरे लौटने लगी।

इसी अवधि में पंचायतों, सहकारी समितियों, धार्मिक संगठनों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई। इन संस्थाओं ने विवादों के समाधान, सामाजिक सहयोग और पुनर्वास कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाई। इससे समाज में स्थिरता स्थापित करने में सहायता मिली।

4.4 महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

विभाजन का सबसे गहरा प्रभाव महिलाओं पर पड़ा। विस्थापन, हिंसा, असुरक्षा और पारिवारिक विछोह जैसी परिस्थितियों ने उनके जीवन को कई स्तरों पर प्रभावित किया। अनेक महिलाओं ने अपने परिवारों के पुनर्निर्माण की जिम्मेदारी स्वयं संभाली।

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

हरियाणा में बसने वाले अनेक परिवारों की महिलाओं ने घरेलू कार्यों के अतिरिक्त कृषि, पशुपालन, लघु उद्योग और पारिवारिक व्यवसायों में सक्रिय योगदान दिया। आर्थिक परिस्थितियों ने उन्हें पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़कर परिवार की आय में सहयोग करने के लिए प्रेरित किया। यह परिवर्तन तत्काल व्यापक सामाजिक समानता का संकेत नहीं था, लेकिन इससे महिलाओं की सामाजिक भूमिका पहले की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण अवश्य हुई।

इसके साथ ही शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में भी धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई देने लगे। शरणार्थी समुदायों ने कन्या शिक्षा तथा सामाजिक संस्थाओं की स्थापना में भी रुचि दिखाई, जिसका प्रभाव आने वाले वर्षों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

4.5 शिक्षा और सामाजिक चेतना का विस्तार

विभाजन के बाद शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण के साधन के रूप में भी देखा जाने लगा। पश्चिमी पंजाब से आए अनेक शिक्षक, शिक्षाविद् और समाजसेवी अपने अनुभव के साथ हरियाणा पहुँचे। उन्होंने विद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सरकारी प्रयासों और सामाजिक संगठनों की सहभागिता से शिक्षा का दायरा धीरे-धीरे बढ़ा। ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई तथा विस्थापित परिवारों ने भी अपने बच्चों की शिक्षा को प्राथमिकता देना प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अगले दो दशकों में क्षेत्र में शैक्षिक जागरूकता पहले की तुलना में अधिक व्यापक हुई।

शिक्षा के विस्तार ने सामाजिक गतिशीलता को भी बढ़ावा दिया। नई पीढ़ी ने रोजगार, प्रशासन, व्यापार और अन्य क्षेत्रों में अवसर प्राप्त किए, जिससे हरियाणा के सामाजिक विकास को नई दिशा मिली।

4.6 सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव

विभाजन केवल लोगों का स्थानांतरण नहीं था; यह सांस्कृतिक अनुभवों का भी स्थानांतरण था। पश्चिमी पंजाब से आए लोग अपने साथ भाषा, भोजन, लोकगीत, धार्मिक परंपराएँ और सामाजिक रीति-रिवाज भी लेकर आए। इनका स्थानीय संस्कृति के साथ धीरे-धीरे समन्वय हुआ।

हरियाणा की पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान बनी रही, किन्तु उसमें नई सांस्कृतिक विशेषताओं का समावेश भी हुआ। धार्मिक उत्सवों, मेलों, विवाह परंपराओं तथा लोकसंगीत में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने सामाजिक विविधता को समृद्ध किया और क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को अधिक व्यापक बनाया।

4.7 सामाजिक परिवर्तन का समग्र मूल्यांकन

हरियाणा के सामाजिक जीवन पर विभाजन के प्रभावों का मूल्यांकन केवल विस्थापन और संकट तक सीमित नहीं किया जा सकता। निस्संदेह प्रारम्भिक वर्षों में समाज ने असुरक्षा, संसाधनों की कमी और सामाजिक तनाव जैसी अनेक चुनौतियों का सामना किया। किन्तु समय के साथ यही परिस्थितियाँ सामाजिक पुनर्गठन का आधार भी बनीं।

नए समुदायों का आगमन, आर्थिक सहयोग, शिक्षा का विस्तार, सामाजिक संस्थाओं की सक्रियता तथा सांस्कृतिक समन्वय ने हरियाणा के सामाजिक विकास को नई दिशा प्रदान की। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ, बल्कि कई वर्षों तक चलने वाली क्रमिक प्रक्रिया का परिणाम था।

इसीलिए यह कहा जा सकता है कि 1947 का विभाजन हरियाणा के लिए केवल एक ऐतिहासिक त्रासदी नहीं था, बल्कि उसने सामाजिक पुनर्निर्माण की ऐसी प्रक्रिया को जन्म दिया जिसने आगे चलकर राज्य के विकास की आधारभूमि तैयार की।

5. हरियाणा के आर्थिक जीवन पर विभाजन का प्रभाव

भारत-विभाजन का प्रभाव हरियाणा के आर्थिक जीवन पर गहरा और बहुआयामी था। प्रारम्भिक वर्षों में विस्थापन, उत्पादन में गिरावट, संसाधनों की कमी तथा प्रशासनिक चुनौतियों ने आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित किया। किन्तु समय के साथ पुनर्वास की प्रक्रिया, भूमि के पुनर्वितरण तथा विस्थापित समुदायों की उद्यमशीलता ने आर्थिक पुनर्निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस परिवर्तन को केवल तत्कालीन परिस्थितियों तक सीमित नहीं माना जा सकता, क्योंकि इसके प्रभाव आने वाले दशकों में हरियाणा के कृषि, व्यापार, उद्योग और नगरीय विकास में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

5.1 कृषि एवं भूमि व्यवस्था में परिवर्तन

विभाजन से पहले वर्तमान हरियाणा की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित थी। अधिकांश ग्रामीण परिवार खेती और पशुपालन पर निर्भर थे। विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए अनेक मुस्लिम कृषकों की कृषि भूमि परित्यक्त रह गई। सरकार ने इन भूमि क्षेत्रों का सर्वेक्षण कर उन्हें पश्चिमी पंजाब से आए विस्थापित कृषक परिवारों को आवंटित करने का निर्णय लिया।

भूमि के इस पुनर्वितरण ने केवल स्वामित्व में परिवर्तन नहीं किया, बल्कि कृषि उत्पादन की संरचना को भी प्रभावित किया। पश्चिमी पंजाब से आए अनेक किसान व्यावसायिक खेती, सिंचाई प्रबंधन तथा उन्नत कृषि तकनीकों का अनुभव रखते थे। उन्होंने स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार इन अनुभवों का उपयोग किया, जिससे उत्पादन क्षमता में धीरे-धीरे सुधार होने लगा।

हालाँकि प्रारम्भिक वर्षों में भूमि अभिलेखों की विसंगतियाँ, स्वामित्व विवाद तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ भी सामने आईं। अनेक विस्थापित परिवारों को पर्याप्त कृषि उपकरण, पशुधन और सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। फिर भी सरकारी सहायता और व्यक्तिगत श्रम के बल पर उन्होंने धीरे-धीरे अपनी कृषि व्यवस्था को व्यवस्थित किया।

यह प्रक्रिया आगे चलकर हरियाणा में कृषि आधुनिकीकरण के लिए एक आधार तैयार करती दिखाई देती है। इसलिए यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि विभाजन ने प्रत्यक्ष रूप से हरित क्रांति नहीं लाई, बल्कि ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कीं जिनसे भविष्य के कृषि विकास को गति मिली।

5.2 कृषि उत्पादन एवं तकनीकी परिवर्तन

पुनर्वासित कृषकों ने केवल भूमि प्राप्त नहीं की, बल्कि वे अपने साथ कृषि संबंधी व्यावहारिक ज्ञान भी लेकर आए थे। पश्चिमी पंजाब में प्रचलित सिंचाई व्यवस्था, उन्नत बीजों का चयन, फसल चक्र तथा बाजारोन्मुख कृषि की प्रवृत्ति ने हरियाणा के कई क्षेत्रों में नई सोच को जन्म दिया।

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

धीरे-धीरे किसानों ने उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से कृषि कार्यों में अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना प्रारम्भ किया। जहाँ सिंचाई की सुविधाएँ उपलब्ध थीं, वहाँ कृषि उत्पादन में अपेक्षाकृत तेज़ वृद्धि देखी गई। इससे स्थानीय बाजारों में कृषि उत्पादों की उपलब्धता बढ़ी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई गति मिली।

यद्यपि इन परिवर्तनों का प्रभाव सभी जिलों में समान नहीं था, फिर भी यह स्पष्ट है कि विभाजन के बाद कृषि केवल जीविकोपार्जन का माध्यम न रहकर धीरे-धीरे व्यावसायिक गतिविधि का स्वरूप ग्रहण करने लगी।

5.3 व्यापार एवं स्थानीय बाजारों का विस्तार

हरियाणा के आर्थिक जीवन में सबसे उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक व्यापारिक गतिविधियों का विस्तार था। विभाजन से पूर्व अधिकांश नगर स्थानीय कृषि बाजारों तक सीमित थे, किन्तु पुनर्वासित परिवारों के आगमन के बाद व्यापारिक संरचना में नई गतिशीलता दिखाई देने लगी।

पश्चिमी पंजाब से आए अनेक परिवार व्यापार, कपड़ा, अनाज, धातु, परिवहन तथा लघु उद्योगों से जुड़े हुए थे। उन्होंने अपने अनुभव और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर नए व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थापना की। अम्बाला, पानीपत, करनाल और रोहतक जैसे नगरों में व्यापारिक गतिविधियों का दायरा पहले की तुलना में अधिक व्यापक हुआ।

इन नए व्यापारिक प्रयासों ने केवल बाजारों का विस्तार नहीं किया, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न किए। स्थानीय उत्पादों के विपणन में सुधार हुआ तथा विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक संपर्क मजबूत होने लगे।

5.4 लघु उद्योग एवं उद्यमशीलता का विकास

विभाजन के बाद हरियाणा में उद्यमशीलता की नई प्रवृत्ति देखने को मिली। अनेक विस्थापित परिवार सीमित संसाधनों के बावजूद छोटे उद्योगों और स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़े। कपड़ा निर्माण, लकड़ी का कार्य, धातु शिल्प, खाद्य प्रसंस्करण तथा परिवहन जैसे क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही।

विशेष रूप से पानीपत में वस्त्र उद्योग के विकास तथा अम्बाला में व्यापारिक प्रतिष्ठानों के विस्तार में विस्थापित समुदायों का योगदान उल्लेखनीय माना जाता है। उन्होंने स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार छोटे व्यवसाय स्थापित किए, जो समय के साथ संगठित आर्थिक गतिविधियों में परिवर्तित होने लगे।

यह उद्यमशीलता केवल व्यक्तिगत आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं रही। इससे स्थानीय बाजारों में प्रतिस्पर्धा बढ़ी, पूँजी का प्रवाह हुआ तथा रोजगार के नए अवसर भी विकसित हुए। यही कारण है कि अनेक इतिहासकार विभाजन के बाद हरियाणा में आर्थिक सक्रियता बढ़ने के पीछे विस्थापित समुदायों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

5.5 नगरीकरण की प्रक्रिया पर प्रभाव

विभाजन के बाद हरियाणा के अनेक नगरों की जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। पुनर्वास के कारण आवासीय कॉलोनियों, बाजारों और सार्वजनिक संस्थानों का विस्तार हुआ। इससे नगरीकरण की प्रक्रिया को नई गति मिली।

अम्बाला, करनाल, पानीपत और रोहतक जैसे नगर केवल प्रशासनिक केन्द्र नहीं रहे, बल्कि व्यापार, शिक्षा और सेवाओं के भी महत्वपूर्ण केन्द्र बनते गए। नई आबादी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिवहन, संचार, स्वास्थ्य तथा शैक्षणिक सुविधाओं का भी क्रमिक विस्तार हुआ।

हालाँकि इस प्रक्रिया के साथ कुछ समस्याएँ भी जुड़ी थीं। सीमित आधारभूत सुविधाओं पर बढ़ते दबाव के कारण प्रारम्भिक वर्षों में आवास, स्वच्छता और सार्वजनिक सेवाओं की कमी महसूस की गई। फिर भी दीर्घकाल में यही नगरीकरण आगे के आर्थिक विकास का आधार बना।

5.6 रोजगार के स्वरूप में परिवर्तन

विभाजन से पहले अधिकांश लोगों की आजीविका कृषि पर आधारित थी। पुनर्वास के बाद आर्थिक गतिविधियों के विविधीकरण ने रोजगार के स्वरूप में भी परिवर्तन किया। कृषि के अतिरिक्त व्यापार, परिवहन, निर्माण कार्य, सेवा क्षेत्र तथा छोटे उद्योगों में रोजगार के अवसर बढ़ने लगे।

विस्थापित समुदायों ने अपने अनुभव और कौशल के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य प्रारम्भ किया। इससे स्थानीय युवाओं के लिए भी नए अवसर उत्पन्न हुए। कई परिवारों ने पारंपरिक कृषि के साथ-साथ व्यापार और लघु उद्योगों को भी अपनाया, जिससे आय के स्रोतों में विविधता आई।

यह परिवर्तन हरियाणा की अर्थव्यवस्था को अधिक संतुलित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

5.7 आर्थिक परिवर्तन का समग्र मूल्यांकन

हरियाणा के आर्थिक जीवन पर विभाजन के प्रभावों का मूल्यांकन करते समय केवल प्रारम्भिक कठिनाइयों पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं होगा। निस्संदेह विस्थापन के कारण उत्पादन, व्यापार और प्रशासनिक व्यवस्था को तत्कालीन समय में गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। किन्तु पुनर्वास की योजनाओं, भूमि के पुनर्वितरण, उद्यमशीलता तथा कृषि सुधारों ने धीरे-धीरे आर्थिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि हरियाणा का आर्थिक विकास केवल विभाजन का परिणाम नहीं था। स्वतंत्र भारत की कृषि नीतियाँ, सिंचाई परियोजनाएँ, सहकारी आंदोलन, हरित क्रांति तथा बाद की औद्योगिक नीतियों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसलिए विभाजन को हरियाणा के विकास का एक महत्वपूर्ण प्रारम्भिक कारक माना जा सकता है, न कि एकमात्र कारण। इस प्रकार उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विभाजन ने हरियाणा की अर्थव्यवस्था को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। प्रारम्भिक संकटों के बावजूद पुनर्वास और पुनर्निर्माण की प्रक्रिया ने ऐसे आर्थिक परिवर्तन प्रारम्भ किए, जिन्होंने आगे चलकर राज्य के कृषि, व्यापार, उद्योग और नगरीय विकास की मजबूत आधारभूमि तैयार की।

6. सरकारी पुनर्वास नीतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन

विभाजन के बाद भारत सरकार के सामने लाखों विस्थापित लोगों के पुनर्वास की अभूतपूर्व चुनौती थी। सीमित संसाधनों और अत्यंत कठिन परिस्थितियों के बावजूद राहत शिविरों की स्थापना, परित्यक्त संपत्तियों का प्रबंधन तथा कृषि भूमि के पुनर्वितरण जैसे अनेक कार्य अपेक्षाकृत कम समय में सम्पन्न किए गए। यह प्रशासनिक दृष्टि से एक बड़ी उपलब्धि थी। फिर भी पुनर्वास प्रक्रिया पूरी तरह समस्यामुक्त नहीं

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

थी। भूमि आवंटन में असमानता, अभिलेखों की त्रुटियाँ, संपत्ति संबंधी विवाद तथा पुनर्वास योजनाओं के असमान क्रियान्वयन जैसी कठिनाइयाँ अनेक क्षेत्रों में सामने आईं। कुछ परिवारों को अपेक्षित सहायता समय पर नहीं मिल सकी, जबकि कई मामलों में प्रशासनिक प्रक्रियाएँ लंबी और जटिल रहीं।

इसके बावजूद समग्र रूप से देखा जाए तो पुनर्वास नीतियों ने विस्थापित परिवारों को पुनः सामाजिक और आर्थिक जीवन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हरियाणा में इन नीतियों के प्रभाव दीर्घकाल तक दिखाई देते हैं, विशेषकर कृषि, व्यापार और नगरीय विकास के क्षेत्रों में।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 1947 का भारत-विभाजन हरियाणा के इतिहास की ऐसी घटना थी जिसने सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया। प्रारम्भिक वर्षों में विस्थापन, असुरक्षा, संसाधनों की कमी और प्रशासनिक चुनौतियों ने सामान्य जीवन को कठिन बना दिया था। अनेक परिवारों ने अपना घर, संपत्ति और आजीविका खो दी, जबकि स्थानीय प्रशासन को सीमित संसाधनों में पुनर्वास की जटिल जिम्मेदारी निभानी पड़ी।

किन्तु इतिहास का दूसरा पक्ष यह भी दर्शाता है कि इन्हीं परिस्थितियों के बीच पुनर्निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। शरणार्थी समुदायों की कार्यकुशलता, उद्यमशीलता और कृषि अनुभव ने स्थानीय संसाधनों के साथ मिलकर आर्थिक गतिविधियों को नई गति प्रदान की। भूमि पुनर्वितरण, व्यापारिक विस्तार, सामाजिक समायोजन और शिक्षा के प्रसार जैसी प्रक्रियाओं ने हरियाणा के विकास को दीर्घकालिक आधार प्रदान किया।

यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विभाजन को केवल मानवीय त्रासदी के रूप में देखना ऐतिहासिक दृष्टि से पर्याप्त नहीं है। निस्संदेह यह एक गहन मानवीय संकट था, परन्तु इसके परिणामस्वरूप सामाजिक पुनर्गठन, आर्थिक पुनर्निर्माण और क्षेत्रीय विकास की नई प्रक्रियाएँ भी विकसित हुईं। हरियाणा इसका महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ पुनर्वास केवल राहत कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि दीर्घकालिक विकास की आधारशिला भी बना।

अतः यह कहा जा सकता है कि हरियाणा का आधुनिक सामाजिक और आर्थिक स्वरूप अनेक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का परिणाम है, जिनमें भारत-विभाजन और उसके बाद की पुनर्वास व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। इस घटना ने राज्य की विकास यात्रा को प्रभावित किया, किन्तु उसका स्वरूप सरकारी नीतियों, स्थानीय समाज की सहभागिता और स्वतंत्र भारत की विकास योजनाओं के संयुक्त प्रयासों से निर्मित हुआ।

संदर्भ सूची

(क) पुस्तकें

1. Butalia U. The Other Side of Silence: Voices from the Partition of India. New Delhi: Penguin Books; 1998.
2. Chandra B, Mukherjee M, Mukherjee A, Panikkar KN, Mahajan S. India Since Independence. New Delhi: Penguin Books; 2008.
3. Chandna RC. Geography of Population: Concepts, Determinants and Patterns. New Delhi: Kalyani Publishers; 2010.
4. Hasan M. India Partitioned: The Other Face of Freedom. New Delhi: Roli Books; 1995.
5. Jalal A. The Pity of Partition: Manto's Life, Times, and Work across the India-Pakistan Divide. Princeton: Princeton University Press; 2013.
6. Kudaisya G, Tan TY. The Aftermath of Partition in South Asia. London: Routledge; 2000.
7. Majumdar RC. History of the Freedom Movement in India. Vol. 1-3. Kolkata: Firma K. L. Mukhopadhyay; 1975.
8. Menon R, Bhasin K. Borders and Boundaries: Women in India's Partition. New Delhi: Kali for Women; 1998.
9. Panigrahi DN. India's Partition: The Story of Imperfection. New Delhi: Vikas Publishing House; 2004.
10. Pandey G. Remembering Partition: Violence, Nationalism and History in India. Cambridge: Cambridge University Press; 2001.
11. Phadnis U. Ethnicity and Nation-Building in South Asia. New Delhi: Sage Publications; 1989.
12. Sarkar S. Modern India, 1885-1947. New Delhi: Macmillan India Ltd.; 1983.
13. Talbot I. Punjab and the Raj, 1849-1947. New Delhi: Manohar Publishers; 1988.
14. Talbot I, Singh G. The Partition of India. Cambridge: Cambridge University Press; 2009.
15. Zamindar VFY. The Long Partition and the Making of Modern South Asia. New York: Columbia University Press; 2007.

(ख) हरियाणा एवं क्षेत्रीय अध्ययन

16. Government of Haryana. Statistical Abstract of Haryana. Chandigarh: Department of Economic and Statistical Analysis; various years.
17. Government of Haryana. Economic Survey of Haryana. Chandigarh: Finance Department; various years.
18. Haryana State Gazetteers Department. Haryana District Gazetteers (Ambala, Karnal, Rohtak, Hisar, Sirsa, Panipat, Gurugram). Chandigarh: Government of Haryana.
19. Singh KC. History of Haryana. New Delhi: Atlantic Publishers.
20. Yadav KC. History of Modern Haryana. New Delhi: Manohar Publishers.
21. Yadav KC. Haryana: Itihas evam Sanskriti. Chandigarh: Haryana Sahitya Akademi.
22. Haryana Sahitya Akademi. Haryana ka Itihas. Panchkula: Haryana Sahitya Akademi.

(ग) सरकारी दस्तावेज एवं प्राथमिक स्रोत

23. Census of India. Census of India 1951: Punjab Series. New Delhi: Government of India; 1951.
24. Census of India. Census of India 1961: Punjab/Haryana Series. New Delhi: Government of India; 1961.
25. Government of India, Ministry of Rehabilitation. Annual Reports. New Delhi: Government of India; various years.
26. Government of India, National Archives of India. Ministry of Home Affairs, Rehabilitation Branch Records. New Delhi: National Archives of India.

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

27. Government of India, Ministry of Rehabilitation. Rehabilitation of Displaced Persons in India. New Delhi: Ministry of Rehabilitation.
28. Government of India. Home Ministry Proceedings. New Delhi: National Archives of India.
29. Punjab Government, Rehabilitation Department. Rehabilitation Department Records. Chandigarh: Government of Punjab.
30. Constituent Assembly of India. Constituent Assembly Debates. New Delhi: Lok Sabha Secretariat.

(घ) शोध-पत्र एवं अकादमिक पत्रिकाएँ

31. Economic and Political Weekly.
32. Indian Historical Review.
33. Proceedings of the Indian History Congress.
34. Studies in History.
35. Modern Asian Studies.
36. South Asia: Journal of South Asian Studies.
37. Journal of Punjab Studies.
38. Social Scientist.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

हेमंत वर्मा इतिहास विभाग, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी, हरियाणा से संबद्ध हैं। उनकी शोध रुचियों में भारतीय इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन, क्षेत्रीय इतिहास, ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण तथा इतिहास लेखन की समकालीन प्रवृत्तियाँ शामिल हैं। वे अकादमिक अनुसंधान एवं गुणवत्तापूर्ण शोध प्रकाशन में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

© 2026 हेमंत वर्मा. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/